संचित, प्रारब्ध एवं क्रियमाण कर्म

भूमिका

'पिताकी आज्ञानुसार वनगमन करनेवाले श्रीरामसे जब भरतजीने अयोध्या लौटनेके लिए पुनः-पुनः विनती की, तब प्रभु श्रीरामने भरतको बताया कि मनुष्यका जीवन पराधीन है, अर्थात प्रारब्धके अधीन है । कर्मसिद्धांतके अनुसार, मनुष्यको अपने उचित-अनुचित कर्मोंके सुख-दुःखरूपी फल इस जन्ममें अथवा अगले जन्ममें भोगने ही पडते हैं । पूर्व जन्मोंके जिन कर्मोंके फल भोगने शेष रह जाते हैं, वे मनुष्यके 'संचितकर्म' कहलाते हैं तथा उनमेंसे जितना फल मनुष्य इस जन्ममें भोगता है, उसे 'प्रारब्धकर्म' कहते हैं । 'बुद्धिः कर्मानुसारिणी ।' अर्थात, मनुष्यकी बुद्धिको प्रारब्धानुसार कर्म करनेकी प्रेरणा होती है । युधिष्ठिर महान धर्मज्ञानी थे, तब भी उन्होंने द्रौपदीको द्युतमें (जुएमें) दांवपर लगा दिया, इसका कारण प्रारब्ध ही था । प्रारब्धका भोग सभीको, यहांतक कि संतोंको भी भोगना ही पडता है । प्रारब्धको निष्प्रभ करनेका एकमात्र उपाय है, 'क्रियमाण कर्म' ।

बुद्धि प्रारब्धके अनुसार आचरण करेगी अथवा नहीं, यह बुद्धिकी प्रगल्भता पर निर्भर करता है । बुद्धिकी प्रगल्भता सत्त्वगुणकी धारकतापर निर्भर है और सत्त्वगुणकी धारकता साधनापर निर्भर है । प्रारब्धका भोग भोगते समय व्यक्ति को अपने संस्कारोंके कारण सुख-दुःखका अनुभव होता है । परंतु, यदि संस्कार ही नष्ट हो जाएं, तो सुख-दुःख अनुभव नहीं होगा । प्रारब्धानुसार देहभोग भोगना ही पडता है । किंतु, यदि भोगका बोध ही न हो, तो फिर भोगका महत्त्व ही क्या ? साधनासे यही साध्य होता है । साधनासे संचित कर्म भी नष्ट होते हैं । इसलिए, संचित और प्रारब्धकी अपेक्षा क्रियमाण कर्म निःसंशय श्रेष्ठ है ।

हिन्दू धर्मने पुनर्जन्मका सिद्धांत प्रस्तुत करते समय 'जन्म-मृत्युके चक्रसे मुक्त होनेका मार्ग भी बताया है । इस ग्रंथमें संचित, प्रारब्ध और क्रियमाणका अर्थ एवं महत्त्व, उनका जीवनपर पडनेवाला प्रभाव, क्रियमाण कर्मसे संचित और प्रारब्धपर विजय, क्रियमाण कर्म करनेके स्तरानुसार चरण आदिका विवेचन

उदाहरणसहित किया गया है ।

यह ग्रंथ पढकर साधना हेतु अधिकाधिक क्रियमाणका उपयोग कर सभी शीघ्रातिशीघ्र ईश्वरतक पहुंचें, यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है ! – **संकलनकर्ता**

अनुक्रमणिका

(कुछ वैशिष्ठ्यपूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

१. संचित कर्म २४

* परिभाषा एवं समानार्थी शब्द २४

* साधारण व्यक्ति, उन्नत पुरुष एवं अवतारोंके संचित कर्मोंकी मात्रा २४

२. प्रारब्धकर्म (दैव, भाग्य, नियति) २६

२ अ. परिभाषा एवं अर्थ २६

२ आ.प्रारब्धका महत्त्व एवं विशेषताएं २८

* जन्म-मृत्यु प्रारब्धके अधीन होना २८

* विकारोंको जीत न पानेका कारण प्रारब्ध ३२

* आत्मज्ञानी पुरुषको भी प्रारब्ध भोगकर समाप्त करना अनिवार्य ३४

२ इ. प्रारब्धभोग भोगनेकी प्रक्रिया / कारण ३५

२ ई. प्रारब्ध अपरिवर्तनीय, उसे भोगना अपरिहार्य ३७

२ उ. प्रारब्धके प्रकार (आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यत्मिक तथा स्वेच्छा, परेच्छा एवं ईश्वरेच्छा प्रारब्ध) ४१

२ ऊ. प्रारब्धकर्म एवं अन्य कर्म (संचित कर्म, क्रियमाण कर्म) ५०

२ ए. प्रारब्धभोगपर विजय पाने हेतु – ज्योतिष, धर्माचरण, साधना साथ ही उन्नत पुरुष, गुरु एवं ईश्वर की कृपा आवश्यक ५२

२ ऐ. उन्नत पुरुष एवं प्रारब्ध ६८

* उन्नतोंका देहप्रारब्ध भिन्न होनेपर भी उनके ज्ञानमें अंतर न होना ७१

* उन्नत पुरुषोंद्वारा भिन्न देह धारण कर प्रारब्ध भोगना ७३
* उन्नत पुरुषोंको परप्रारब्धके कारण होनेवाला कष्ट ७६
* उन्नत पुरुषोंको समष्टि प्रारब्ध भुगतना पडना ७८
२ ओ. ईश्वर एवं मनुष्यका प्रारब्ध ७९
२ औ. मनुष्येतर प्राणिमात्रोंका प्रारब्ध ८०
२ अं. निर्जीव वस्तुओंका परप्रारब्ध ८१

३. क्रियमाण कर्म ८१

३ अ ते ३ ई.परिभाषा, समानार्थक शब्द, प्रक्रिया एवं महत्त्व ८१
३ उ. प्रारब्ध एवं क्रियमाण कर्म ८७
* विविध देहोंसे होनेवाले प्रारब्धकर्म एवं क्रियमाणकर्म ९१
* प्रारब्धसे क्रियमाण श्रेष्ठ ९२
३ ऊ. क्रियमाण कर्मके विषयमें सैद्धांतिक विवेचन ९४
३ ए. क्रियमाण कर्मोंके परिणाम एवं उनकी अवधि ९७
३ ऐ. सत्य एवं असत्य बोलना ९८
३ ओ. प्रगल्भताके अनुसार अयोग्य क्रियमाण कर्मकी मात्रा घटती जाना १००
३ औ. क्रियमाण कर्म एवं भक्तिका महत्त्व १००
३ अं. क्रियमाण कर्म एवं ईश्वरीय (गुरु) कृपाका महत्त्व १०१
३ क. उचित क्रियमाण कर्म करनेके चरण १०१
३ ख. क्रियमाण कर्मका परिणाम नष्ट करनेके उपाय १०२

४. संचित, प्रारब्ध एवं क्रियमाण कर्म नष्ट करनेके लिए ज्ञानकी उपयुक्तता १०३

卐 'संचित, प्रारब्ध एवं क्रियमाण कर्म'संबंधी गहन ज्ञान १०७

卐 'अनिष्ट शक्तियोंसे साधकोंको होनेवाली पीडा' इस संज्ञाका अर्थ १०८

卐 सनातनके ग्रंथ-निर्मितिके कार्यमें सम्मिलित हों ! १०९